क़ुरआन मजीद
की
शिक्षाएँ

नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'
(ख़ुदा के नाम से जो बहुत मेहरबान बड़ा ही रहमवाला है।)

क़ुरआन मजीद की शिक्षाएँ

क़ुरआन मजीद सारे इनसानों के पैदा करनेवाले मालिक और पालनहार की किताब है जो, सारे इनसानों के मार्गदर्शन और रहनुमाई के लिए भेजी गई है।

उसूली तौर पर यह बात समझ लेनी चाहिए कि क़ुरआन में तौहीद (ऐकेश्वरवाद), रिसालत (पैग़म्बरी) और आख़िरत (परलोक) जैसे बुनियादी अक़ीदों और धारणाओं की बड़ी अहमियत बयान हुई है और इनको दलीलों के साथ बड़ी तफ़सील से समझाया गया है। इनको जान लेने के बाद अक़ीदों और धारणाओं में किसी तरह की कमी या बिगाड़ का अन्देशा नहीं रहता। फिर इन बुनियादी अक़ीदों के तक़ाज़ों के तौर पर ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए ऐसी क़ीमती शिक्षाएँ और हिदायतें दी गई हैं कि अगर उनपर अमल किया जाए तो आख़िरत से पहले यह दुनिया जन्नत (स्वर्ग) बन जाए और इनसान को हक़ीक़ी अमन व सुकून, शान्ति और सच्ची राहत हासिल हो जाए।

इस किताब में आपके सामने क़ुरआन की कुछ शिक्षाएँ बहुत ही मुख़्तसर तौर पर पेश की गई हैं, जिनसे अन्दाज़ा

होगा कि क़ुरआन की शिक्षाएँ कितनी व्यापक और क़ीमती हैं। उनका समझना कितना आसान है और उनपर अमल कितनी अहमियत रखता है।

क़ुरआन मजीद से पूरा फ़ायदा उठाने के लिए पूरा क़ुरआन मजीद उसके अनुवाद और टीका (तफ़सीर) के साथ पढ़ना ज़रूरी है। अगर ख़ुदा ने चाहा तो इस पुस्तक से आप को क़ुरआन मजीद को पढ़ने और उस पर अमल करने की प्रेरणा ज़रूर मिलेगी, ऐसी हमें उम्मीद है और इस पुस्तक को पेश करने का मक़सद भी यही है। ख़ुदा इस मक़सद में कामयाबी दे!

—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

ईमान और अमल

"जो लोग ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, जो रोज़ी हमने दी है, उसमें से ख़र्च (सदक़ा) करते हैं। जो ईमान लाते हैं उस हिदायत और मार्गदर्शन पर जो (ऐ पैग़म्बर!) तुमपर उतारी गई और उसपर जो तुमसे पहले उतारी गई थी और आख़िरत (परलोक) पर भी वे ईमान रखते हैं, यही लोग अपने रब की हिदायत पर हैं और यही लोग कामयाब हैं।" (क़ुरआन, 2 : 3-5)

*

"तुम्हारा माबूद (उपास्य) अकेला माबूद है। उस मेहरबान और दयावान के सिवा कोई माबूद (उपास्य) नहीं।"

(क़ुरआन, 2 : 163)

*

"ऐ ईमान लानेवालो! ईमान लाओ ख़ुदा पर और उसके पैग़म्बर पर और उस किताब पर जो उसने अपने पैग़म्बर पर उतारी है और उस किताब पर भी जिसको वह उससे पहले उतार चुका है। जिस किसी ने भी ख़ुदा और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके पैग़म्बरों और अन्तिम दिन (प्रलय दिवस) का इनकार किया तो वह भटककर बहुत दूर जा पड़ा।" (क़ुरआन, 4 : 136)

ख़ुदा और पैग़म्बर (सल्ल०) का आज्ञापालन और फ़रमाँबरदारी

"जो कोई ख़ुदा और उसके पैग़म्बर की फ़रमाँबरदारी करेगा, उसे ख़ुदा ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वे हमेशा रहेंगे। और यही बड़ी कामयाबी है। लेकिन जो ख़ुदा और उसके पैग़म्बर की नाफ़रमानी करेगा और उसकी हदों से आगे बढ़ेगा, तो ख़ुदा उसे आग में दाख़िल करेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा, और उसके लिए रुसवा करनेवाला अज़ाब है।" (क़ुरआन, 4 : 13-14)

*

"तुम्हारे लिए ख़ुदा के पैग़म्बर में बेहतरीन नमूना (आदर्श) है, यानी उसके लिए जो ख़ुदा और अन्तिम दिन (प्रलय दिवस) की आशा रखता हो और ख़ुदा को बहुत याद करे।"

(क़ुरआन, 33 : 21)

*

"जो कोई ख़ुदा और उसके पैग़म्बर की आज्ञा का पालन करे और ख़ुदा का डर रखे और उसकी अवज्ञा से बचे ऐसे ही लोग सफल हैं।" (क़ुरआन, 24 : 52)

इबादतें :

नमाज़, ज़कात, रोज़ा और हज

"उस किताब को पढ़ो जो तुम्हारी तरफ़ वह्य (प्रकाशना) की गई है, नमाज़ का एहतिमाम करो। बेशक नमाज़ बेशर्मी और बुराई से रोकती है, और ख़ुदा को याद करना तो बहुत बड़ी चीज़ है।" (क़ुरआन, 29 :45)

*

"तो तुम नसीहत करो यदि नसीहत फ़ायदेमंद हो। जो आदमी डरता है वह नसीहत क़बूल कर लेगा और जो उससे भागेगा वह बड़ा बदक़िस्मत होगा, वह बड़ी आग में जाएगा, न उसमें मरेगा न जिएगा।

कामयाब हो गया वह जिसने पवित्रता अपनाई और अपने प्रभु का नाम याद किया, फिर नमाज़ पढ़ी। मगर तुम लोग दुनिया की ज़िन्दगी को प्राथमिकता देते हो, हालाँकि आख़िरत ज़्यादा अच्छी और बाक़ी रहनेवाली है। यही बात पहले आई हुई किताबों में कही गई थी, इबराहीम और मूसा की किताबों में।" (क़ुरआन, 87 : 9-19)

*

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, (ख़ुदा के आगे) झुको और सज्दा करो और अपने प्रभु की बन्दगी करो, इसी से उम्मीद

की जा सकती है कि तुमको कामयाबी हासिल हो।"

(क़ुरआन, 22 : 77)

❋

"ऐ ईमानवालो ! जो पवित्र माल तुमने कमाए हैं और जो पैदावार हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाली है उसमें से (सदक़ा और दान में) दिया करो।" (क़ुरआन, 2 : 267)

❋

"तुम नेकी को पा नहीं सकते जब तक कि अपनी वे चीज़ें (ख़ुदा के रास्ते में) ख़र्च न करो जो तुम्हें पसन्द हैं और जो कुछ तुम ख़र्च करोगे ख़ुदा उससे बेख़बर न होगा।"

(क़ुरआन, 3 : 92)

❋

"ऐ ईमानवालो ! तुमपर रोज़े फ़र्ज़ (अनिवार्य) कर दिए गए जैसे तुमसे पहले के लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे, ताकि तुम परहेज़गार हो।" (क़ुरआन, 2 : 183)

❋

"इनसानों पर ख़ुदा का हक़ है कि जो वहाँ तक पहुँचने की सकत रखता हो, उस घर (काबा) का हज करे।"

(क़ुरआन 3 : 97)

समाजी और अख़लाक़ी शिक्षाएँ

"और माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करो। अगर उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उन्हे उफ़ तक न कहो और न उन्हें झिड़को। उनसे निहायत अदब के साथ बात करो और उनके आगे रहमत के साथ नर्मी के बाज़ू बिछाए रखो और कहो : मेरे प्रभु! जिस तरह उन्होंने बचपन में मुझे पाला है, तू भी उनपर दया कर।"

(क़ुरआन, 17 : 23-24)

*

"ख़ुदा ही की इबादत और बन्दगी करो और किसी चीज़ को उसका साझी न ठहराओ। माँ-बाप के साथ, रिश्तेदारों के साथ, यतीमों के साथ, मोहताजों के साथ, क़रीबी पड़ोसी के साथ, अजनबी पड़ोसी के साथ, क़रीब के साथियों के साथ, मुसाफ़िर के साथ और अपने मातहत लोगों के साथ अच्छा सुलूक करो। ख़ुदा ऐसे शख़्स को पसन्द नहीं करता जो इतराता और डींगें मारता हो।" (क़ुरआन, 4 : 36)

*

"रिश्तेदार को उसका हक़ दो।" (क़ुरआन, 17 : 26)

*

"मोहताज और मुसाफ़िर को भी उसका हक़ दो।"

(क़ुरआन, 17 : 26)

*

"अपनी औलाद का ग़रीबी के डर से क़त्ल न करो। हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी। बेशक उनका क़त्ल बहुत ही बड़ा जुर्म है।" (क़ुरआन, 17 : 31)

*

"फ़ुज़ूलख़र्ची मत करो, इसमें कोई शक नहीं कि फ़ुज़ूलख़र्ची करनेवाले शैतानों के भाई हैं। और शैतान अपने रब का बड़ा ही नाफ़रमान है।" (क़ुरआन, 17 : 26-27)

*

"ज़िना (व्यभिचार) के क़रीब भी न फटको। बैशक वह एक घिनौना काम और बुरा रास्ता है।" (क़ुरआन, 17 : 32)

*

"अपने माल आपस में ग़लत तरीक़े से न खाओ और न उन्हें अधिकारियों को (रिश्वत के तौर पर) दो कि लोगों के कुछ माल हक़ मारकर जानते-बूझते हड़प सको।"

(क़ुरआन, 2 : 188)

*

"जो कुछ ख़ुदा ने तुममें से किसी को दूसरे के मुक़ाबले में

ज़्यादा दिया है, उसकी तमन्ना न करो। जो कुछ मर्दों ने कमाया है, उसके मुताबिक़ उनका हिस्सा है और जो कुछ औरतों ने कमाया है, उसके मुताबिक़ उनका हिस्सा है। हाँ ख़ुदा से उसके फ़ज़्ल की दुआ करते रहो, बेशक ख़ुदा को हर चीज़ का इल्म है।" (क़ुरआन, 4 : 32)

*

"ऐ ईमानवालो! यह शराब और जुआ, आस्ताने और पाँसे (फ़ाल) तो गन्दे शैतानी काम हैं, तो तुम इनसे बचो ताकि तुम्हें कामयाबी हासिल हो।" (क़ुरआन, 5 : 90)

*

"ख़ुदा को छोड़कर वे जिन्हें पुकारते हैं तुम लोग उनके लिए नामुनासिब अल्फ़ाज़ (अपशब्द) इस्तेमाल न करो।"
(क़ुरआन, 6 : 108)

*

"ऐ ईमानवालो! जानते-बूझते तुम ख़ुदा और उसके पैग़म्बर के साथ ख़ियानत न करना, और न ही अपनी अमानतों में ख़ियानत करना।" (क़ुरआन, 8 : 27)

*

"बेशक ख़ुदा इनसाफ़ और एहसान का और रिश्तेदारों को देने का हुक्म देता है और बेशर्मी और बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम याददेहानी हासिल करो।" (क़ुरआन, 16 : 90)

*

"वादे को पूरा करो, (क़ियामत के दिन) वादे के बारे में लाज़िमी तौर पर पूछा जाएगा।" (क़ुरआन, 17 : 34)

*

"जो भी अपने वचन को पूरा करेगा और बुराई से बचकर रहेगा, वह ख़ुदा का प्यारा बनेगा, क्योंकि परहेज़गार लोग ख़ुदा को पसन्द हैं।" (क़ुरआन, 3 : 76)

*

"जब नापकर दो तो नाप पूरी रखो और वज़न सही तराज़ू से करो। यही अच्छा और अंजाम के लिहाज़ से बेहतर है।"

(क़ुरआन, 17 : 35)

*

"तबाही है डंडी मारनेवालों के लिए। जो नापकर लोगों से लेते हैं तो पूरा लेते हैं और जब उन्हें नापकर या तौलकर देते हैं तो कम देते हैं। क्या वे समझते नहीं कि उन्हें (ज़िन्दा होकर) उठना है, एक बड़े दिन! उस दिन लोग सारे संसार के रब के सामने (हिसाब के लिए) खड़े होंगे।"

(क़ुरआन, 83 : 1-6)

*

"जिस चीज़ का तुम्हें इल्म (ज्ञान) न हो उसके पीछे न लगो; बेशक कान और आँख और दिल इनमें से हरेक के बारे में

(क़ियामत के दिन) पूछ-गच्छ होगी।" (क़ुरआन, 17 : 36)

*

"ज़मीन में अकड़ते हुए न चलो, न तो तुम ज़मीन को फाड़ सकते हो और न पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकते हो।"

(क़ुरआन, 17 : 37)

*

"झूती बात से बचो।" (क़ुरआन, 22 : 30)

*

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! ख़ुदा का डर रखो (और उसकी नाफ़रमानी से बचो) जैसा कि उसका डर रखने (और उसकी नाफ़रमानी से बचने) का हक़ है। और तुम्हें मौत इसी हालत में आए कि तुम (ख़ुदा के) फ़रमाँबरदार हो। और सब मिलकर ख़ुदा की रस्सी (क़ुरआन) को मज़बूती से पकड़ लो, और तफ़रिक़े (विभेद) में मत पड़ो।"

(क़ुरआन, 3 : 102-103)

*

"ईमानवाले तो भाई-भाई हैं, तो तुम अपने दो भाइयों के बीच सुलह (मेल-मिलाप) करा दो।" (क़ुरआन, 49 : 10)

*

"ऐ ईमानवालो! न मर्द दूसरे मर्दों का मज़ाक़ उड़ाएँ,

मुमकिन है कि वे उनसे अच्छे हों और न औरतें औरतों का मज़ाक़ उड़ाएँ, हो सकता है वे उनसे अच्छी हों, और न अपनों को ताने दो और न एक-दूसरे को बुरे नाम दो, ईमान के बाद फ़ासिक़ (दुराचारी) होना बहुत बुरा नाम है।"

(क़ुरआन, 49 : 11)

"ऐ ईमानवालो ! बहुत ज़्यादा गुमान करने से बचो, क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं, और न टोह में लगो और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे बुराई करे, क्या तुममें से कोई इसको पसन्द करेगा कि वह अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए? तुम इससे नफ़रत करोगे। ख़ुदा का डर रखो, बेशक ख़ुदा बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला, मेहरबान है।"

(क़ुरआन, 49 : 12)

"ऐ लोगो ! जो ईमान लाए हो, तुम क्यों वह बात कहते हो जो करते नहीं हो? ख़ुदा की निगाह में यह बहुत ही नापसन्दीदा बात है कि तुम वह बात कहो जो करते नहीं।"

(क़ुरआन, 61 : 2-3)

"तुम दूसरों को तो नेकी का रास्ता अपनाने के लिए कहते हो, मगर अपने आपको भूल जाते हो, हालाँकि तुम (ख़ुदा

की) किताब पढ़ते हो। क्या तुम अक़्ल से बिलकुल ही काम नहीं लेते!"

(क़ुरआन, 2 : 44)

*

"यतीम को मत दबाओ और माँगनेवाले को मत झिड़को।"

(क़ुरआन, 93 : 9-10)

*

"ऐ ईमानवालो! ख़ुदा के लिए उठनेवाले, इनसाफ़ की गवाही देनेवाले बनो और किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें हरगिज़ इस बात पर न उभारे कि तुम इनसाफ़ करना छोड़ दो। तुम्हें चाहिए कि (हर हालत में) इनसाफ़ करो, यही परहेज़गारी और ख़ुदातर्सी से मेल खाती बात है। ख़ुदा का डर रखो। बेशक ख़ुदा उन बातों से बाख़बर है जो तुम करते हो।"

(क़ुरआन, 5 : 8)

*

"भलाई और बुराई बराबर नहीं। तुम्हें चाहिए (नामुनासिब बात का) जवाब भले तरीक़े से दो। तुम देखोगे कि जिससे तुम्हारी दुश्मनी थी, वह तुम्हारा जिगरी दोस्त बन गया है।"

(क़ुरआन, 41 : 34)

*

"(जन्नत के हक़दार वे लोग हैं) जो ख़ुशहाली और तंगी दोनों हालतों में भले कामों में (माल) ख़र्च करते हैं और ग़ुस्से को पी जाते हैं और लोगों की ग़लतियाँ माफ़ कर देते हैं। और ख़ुदा को ऐसे लोग पसन्द हैं जो अच्छे-से-अच्छा काम करते हैं।" (क़ुरआन, 3 : 134)

*

"जिसने किसी शख़्स को किसी के ख़ून का बदला लेने और ज़मीन में बिगाड़ व फ़साद फैलाने के सिवा किसी और वजह से क़त्ल किया, तो मानो उसने सारे इनसानों का क़त्ल कर दिया और जिसने उसे ज़िन्दगी बख़्शी, उसने मानो सारे इनसानों को ज़िन्दगी बख़्श दी।" (क़ुरआन, 5 : 32)

*

"(ऐ मुसलमानो !) तुम्हें ऐसा समुदाय बन जाना चाहिए जो नेकी की तरफ़ बुलाए, भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके। ऐसे ही लोग कामयाब होनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 3 : 104)

*

"ऐ लोगो ! बेशक हमने तुम सबको एक ही मर्द और एक ही औरत से पैदा किया है और तुम्हें ख़ानदानों और क़बीलों का रूप दे दिया ताकि एक-दूसरे को पहचान सको। (तुम सब बराबर और भाई-भाई हो, तुम में कोई ऊँच-नीच नहीं।) बेशक ख़ुदा के नज़दीक तुममें ज़्यादा इज़्ज़तवाला वही है जो तुममें ज़्यादा ख़ुदातरस और परहेज़गार है।" (क़ुरआन, 49 : 13)